टिप्पणियाँ

20

भ्वादिप्रकरण में आत्मनेपद प्रकरण

धातु दो प्रकार की होती है, परस्मैपद एवं आत्मनेपद। परस्मैपदी धातुओं को पूर्व में पढ़ चुके हैं। इस पाठ में आत्मनेपदी एध् धातु को उपस्थित किया गया है। एध् नायक धातु है। इसके सभी लकारों में रूप प्रदर्शित किये जायेंगे। उसके ज्ञान से आत्मनेपदी की अन्य धातुओं के रूप सिद्ध कर सकेंगे। आत्मनेपद के पूर्व प्रकरण में पढ़ चुके सूत्रों को छोड़कर शेष आवश्यक सूत्रों को यहां उपस्थिति किया गया है। यहां पूर्व के समान सूत्र व्याख्या में प्रत्येक पद की विभक्ति समासादि को स्पष्ट किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप –

- तिङन्त प्रकरण के आत्मनेपद प्रकरणस्थ सूत्रों को जानेंगे;
- धातु के बाद आत्मनेपद प्रत्ययों का प्रयोग कर सकेंगे;
- एध् धातु के समान अन्य धातु रूपों को सिद्ध कर सकेंगे;
- सूत्रों की व्याख्या करने में समर्थ होंगे;
- आत्मनेपद धातुओं के रूप, विशेषता को जानेंगे;
- आत्मनेपद धातु रूपों को अपनी भाषा में प्रयोग कर सकेंगे।

एध् धातु - लट् लकार

धातु प्रकरण में मूलरूप एध् वृद्धौ धातु पठित है। यह वृद्धि अर्थक धातु है। यह धातु अनुदात्तेत् (अनुदात्त इत्) है। अत: अनुदात्तङित आत्मनेपदम् सूत्र से आत्मनेदपदी है। यह धातु भ्वादिगणपठित, वृद्ध्यर्थकवाची, आत्मनेपदी, अकर्मक, अनुदात्तेत् सेट् है।

20.1 टित आत्मनेपदानां टेरे॥ (3.4.79)

सूत्रार्थ - टित् लकार के स्थान पर होने वाले आत्मनेपद प्रत्ययों की टि के स्थान पर एकार आदेश हो।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। टित: (6/1) आत्मनेपदानाम् (6/3), टे: (6/1), ए (1/1)। लस्य का अधिकार है। अचोऽन्त्यादि टि सूत्र से टि संज्ञा का विधान होता है। सूत्रार्थ होता है - टित् लकार के स्थान पर होने वाले आत्मनेपद प्रत्ययों की टि के स्थान पर एकार आदेश होता है। दशलकारों में टित् लकार छ: हैं। लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट् एवं लोट्। इन लकारों में टि को एकार होता है।

उदाहरण - एधते

सूत्रार्थ समन्वय - वृद्धि अर्थक एध् धातु से वर्तमाने लट् से लट्, अनुदात्तेत होने से अनुदात्तङित आत्मनेपदम् सूत्र से आत्मनेपद संज्ञक प्रत्ययों में प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में 'त' प्रत्यय होकर एध्+त्, ङित् त प्रत्यय की तिङ् शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा होकर कर्तरि शप् से कर्ता अर्थ में शप् का आगम तथा अनुबन्ध लोप होकर एध्+अ+त यहां प्रकृत सूत्र टित आत्मनेपदानां टेरे सूत्र से त् के 'अ' टि संज्ञक को ए होकर एधते रूप सिद्ध होता है।

एधेते - एध् धातु से लट् में प्रथमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में आत्मनेपद संज्ञक आताम् प्रत्यय एवं कर्तरिशप् से शप् का आगम एवं अनुबन्ध लोप होकर एध्+अ+आताम् स्थिति बनती है। तब-

20.2 आतो ङित:॥ (7.2.89)

सूत्रार्थ - अदन्त अंग से परे ङितों के आकार के स्थान पर इय् आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। आत: (6/1) ङित: (6/1)। अत: (5/1), इय: (1/1) इन दो पदों की अनुवृत्ति होती है, ङकार इत् यस्य स ङित्। अंगस्य का अधिकार आता है। अगंस्य इस पंचम्यन्त पद से विपरिणमत है। पद योजना - अत: अंगात् ङित: आत: इय्। अत: अंगात् पद का विशेषण है। उससे अदन्तात् अंगात् यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है- अदन्त अंग से परे ङितों के आकार के स्थान पर इय् आदेश होता है। यहां आताम् इत्यादि प्रत्ययों की स्वयं डित् संज्ञा नहीं है तथापि सार्वधातुकमपित् सूत्र से उसकी ङित् संज्ञा होती है।

उदाहरण - एधेते।

टिप्पणियाँ

सूत्रार्थसमन्वय - एध्+अ+आताम् स्थिति में सार्वधातुकमपित् से आताम् की ङित् संज्ञा होकर प्रकृत सूत्र आतोङित: से आताम् के आ को इय् होकार एध्+अ+इय्+ताम् तथा लोपो व्योर्वलि से इय् के य् का लोप एवं अकार एवं इकार के स्थान पर गुण एकादेश होकर एधेताम् स्थिति में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि ताम् के आम् को ए होकर **एधेते** रूप सिद्ध होता है।

एधन्ते - एध् धातु से लट् में प्रथमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में आत्मनेपद झ प्रत्यय, झोऽन्त: से अन्त आदेश एवं कर्तरिशप् से शप् का आगम एवं अनुबन्ध लोप होकर एध्+अ+अन्त स्थिति बनती है। अतोगुणे से पररूप एकादेश होकर एध्+अन्त यहां टित आत्मनेपदानां टेरे सूत्र से त् के 'अ' टि संज्ञक को ए होकर एधन्ते रूप सिद्ध होता है।

एधसे - एध् धातु से लट् में मध्यमपुरूष एकवचन की विवक्षा में आत्मनेपद थास् प्रत्यय। तब-

20.3 थास: से।। (3.4.80)

सूत्रार्थ - टित् लकार के स्थान पर हुए थास् को से आदेश हो।

सूत्रव्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। थास: (6/1) से (1/1) टित् आत्मनेपदानां टेरे सूत्र से टित: (6/1) की अनुवृत्ति है। लस्य का अधिकार है। सूत्रार्थ होता है - टित् लकार के स्थान पर हुए थास् को से आदेश होता है। से आदेश अनेकाल् होने से सर्वादेश होता है।

उदाहरण - एधसे

सूत्रार्थ समन्वय - एध्+अ+थास् स्थिति में प्रकृत सूत्र थास: से सूत्र से थास् को सर्वादेश से होकर एधसे रूप सिद्ध होता है।

एधेथे - एध् धातु से लट् में मध्यमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में आत्मनेपद संज्ञक आथाम् प्रत्यय एवं कर्तरिशप् से शप् का आगम एवं अनुबन्ध लोप होकर एध्+अ+आथाम् स्थिति में सार्वधातुकमपित् से आथाम् की ङित् संज्ञा होकर आतोङित: से आथाम् के आ को इय् होकार एध्+अ+इय्+थाम् तथा लोपो व्योर्वलि से इय् के य् का लोप एवं अकार एवं इकार के स्थान पर गुण एकादेश होकर एधेथाम् स्थिति में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि थाम् के आम् को ए होकर **एधेथे** रूप सिद्ध होता है।

एधध्वे - एध् धातु से लट् में मध्यमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय, कर्तरिशप् से शप् का आगम, टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि ध्वम् के अम् को ए होकर **एधेध्वे** रूप सिद्ध होता है।

एधे - एध् धातु से लट् में उत्तमपुरूष एकवचन की विवक्षा में इट् प्रत्यय, कर्तरिशप् से शप् का आगम, टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि इ को ए होकर एध्+अ+ए स्थिति में अतोगुणे से पररूप एकादेश होकर एधे रूप सिद्ध होता है।

एधावहे -एध् धातु से लट् में उत्तमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में वहि प्रत्यय, कर्तरिशप् से शप् का आगम, टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि वहि के इ को ए होकर एध्+अ+वहे स्थिति में अतो दीर्घो यञि से दीर्घ होकर एधावहे रूप सिद्ध होता है।

एधामहे -एध् धातु से लट् में उत्तमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में महि प्रत्यय, कर्तरिशप् से शप् का आगम, टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि महि के इ को ए होकर एध्+अ+महे स्थिति में अतो दीर्घो यञि से दीर्घ होकर एधामहे रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार अन्य धातुओं के रूप लट् लकार में सिद्ध कर सकते है। एध् धातु से लट् में रूप-

लट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधते	एधेते	एधन्ते
मध्यमपुरुषः	एधसे	एधेथे	एधध्वे
उत्तमपुरुषः	एधे	एधावहे	एधामहे

पाठगत प्रश्न 20.1

1. एध् धातु का अर्थ क्या है?
2. एध् धातु का धातुपाठ में कैसा पाठ है?
3. एध् धातु उदात, अनुदात्त या स्वरित है?
4. एध् धातु आत्मनेपदी या परस्मैपदी?
5. एध् धातु को आत्मनेपद प्रमाणित करने वाला सूत्र है?
6. एध् धातु से तिप् आदि नो प्रत्यय कहाँ नहीं होते?
7. एध् धातु सेट् है अनिट्?
8. एध् धातु सकर्मक है या अकर्मक?
9. एध् धातु के एधत रूप में त का ते करना वाला सूत्र है?
10. टि संज्ञा किसकी होती है?
11. एध् धातु का लट् में रूप लिखिए?
12. आताम् प्रत्यय किस सूत्र से ङित् होता है?
13. आताम् के आकार को इय् किस सूत्र से होता है?
14. आतोङितः सूत्र का अर्थ क्या है?

एध धातु - लिट् लकार

20.4 इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः॥ (3.1.36)

सूत्रार्थ - ऋच्छ् से भिन्न ऐसी इजादि धातु जो गुरूवर्ण से युक्त हो, उस से परे आम् प्रत्यय हो जाता है लिट् परे हो तो।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में इजादे: (5/1), च अव्यय, गुरुमत: (5/1), अनृच्छ: (5/1)ये चार पद है। धातोरेकाचो हलादे: क्रिया समभिव्याहारे यङ् सूत्र से धातो: इस पंचम्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। आम् (1/1) विधेयबोधकपद, लिटि(7/1) पद की कास्प्रत्ययादामन्त्रणे लिटि सूत्र से अनुवृत्ति है। प्रत्यय: और परश्च इन दो सूत्रों का अधिकार है। इच् आदिर्यस्य स इजादि:, तस्माद् इजादे: इति बहुव्रीहिसमास:। गुरू: अस्ति अस्मिन् इति गुरूमान्, तस्माद् गुरूमत:। न ऋच्छ, अनृच्छ, तस्माद अनृच्छ:। पद योजना - इजादे: च गुरूमत: अनृच्छ: धातो: आम् प्रत्यय पर च लिटि। सूत्रार्थ होता है - इजादि जो धातु गुरूमान है, ऋच्छ नहीं है, उस धातु को आम् प्रत्यय होता है, लिट् परे हो तो।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - एध् धातु को अनद्यतन परोक्षभूतार्थ क्रियावृत्ति का परोक्षे लिट् से लिट् लकार होकर एध्+लिट् स्थिति में एध् धातु एकारादि होने से इजादि है। दीर्घ च सूत्र से एकार गुरूसंज्ञक है। अत: एध् धातु गुरूमान् भी है। अत: इस धातु को प्रकृत सूत्र से आम् प्रत्यय होता है। उससे एध्+आम्+लिट् स्थिति में वर्णमेल होकर एधाम्+लिट् रूप बनता है। तब आम: सूत्र से लिट् का लुक् होता है। लिट् कृदतिङ् सूत्र से कृतसंज्ञक है एधाम् से लिट् का लोप में प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् सूत्र से प्रत्ययलक्षण करके एधाम् कृदन्त है। उसकी कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। स्वौजसौट ... सूत्र से सु सुबन्त में एधाम्+सु स्थिति में आम: सूत्र से सु का लोप होकर एधाम् शेष रहता है। इसका पुन: प्रत्यय लक्षण करके सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से पद संज्ञा होती है।

एधाम् इस आमन्तत्व से कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि सूत्र से लिट् परक को कृ, भू, अस् धातुओं प्रयोग होता है। सर्वप्रथम कृ धातु का प्रयोग प्रस्तुत है।

सूत्रावतरण - एधाम्+कृ+लिट् इस स्थिति में ल् के स्थान पर आत्मनेपद या परस्मैपद हो यह शंका उपस्थित होती है। वहां आत्मनेपद विधायक यह सूत्र प्रवृत्त होता है।

20.5 आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य॥ (1.3.63)

सूत्रार्थ - जिस से आम् प्रत्यय का विधान किया जाता है आम् की उस प्रकृति को आत्प्रत्यय कहते है। आम्प्रत्यय अर्थात् आम् की प्रकृति के समान अनुप्रयुज्यमान कृञ् धातु से भी आत्मनेपद हुआ करता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में चार पद है। आम्प्रत्ययवत् अव्ययपद कृञ: षष्ठ्यन्त पद, अनुप्रयोगस्य षष्ठ्यन्त पद है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् इस सूत्र से आत्मनेपदम् इस प्रथमान्त

पद की अनुवृत्ति है। आम्प्रत्ययः यस्मात् स आम्प्रत्ययः इस शब्द से जिससे आम् प्रत्यय का विधान किया गया है उसी का ही ग्रहण करना चाहिए न कि आम् प्रत्यय सहित का। सूत्रार्थ होता है – आम्प्रत्यय का विधान जिससे किया जाता है आम् की प्रकृति समान अनुप्रयुज्य कृञ् धातु आत्मनेपदी होती है।

यहां एध् धातु से आम् प्रत्यय विहित है। उससे एधाम् प्राप्त है। आम्प्रत्यय पद से एध् आम् की प्रकृति की ग्रहित है आम् की प्रकृति से यदि आत्मनेपद होता है तो आमन्तात् से परे जो अनुप्रयुज्य कृ धातु है उससे परे लिट् के स्थान पर आत्मनेपद होता है।

सूत्रार्थ समन्वय – एधाम्+कृ+लिट् स्थिति में एधाम् में आम् प्रत्यय एध् धातु से विहित है। अतः आम् प्रकृति एध् धातु है। एध् धातु से आत्मनेपद होता है। अतः अनुप्रयुक्त कृ धातु को प्रकृत सूत्र से आत्मनेपद का विधान होने से प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+त स्थिति सम्पन्न हुई।

20.6 लिटस्तझयोरेशिरेच्॥ (3.4.89)

सूत्रार्थ – लिट् के स्थान पर आदेश हुए 'त' और अ प्रत्ययों को क्रमशः एश् और इरेच् हो।

सूत्र व्याख्या – यह विधि सूत्र है। इसमें लिटः (6/1) तझयोः (6/2), एशिरेच् (1/1) ये तीन पद है। तश्च अश्च तझौ तयो तझयोः, इतरेतरयोगद्वन्द्व। एश् च इरेच् च इति एशिरच् इति समाहारद्वन्द्व समासः। यहां यथा संख्यमनुदेशः समानाम् की परिभाषा प्रवृत है। उससे त के स्थान पर एश् और झ के स्थान पर इरेच् होता है। एश् शित् होने से तथा ईरच् अनेकाल् होने से सम्पूर्ण के स्थान पर होते है। सूत्रार्थ होता है – लिट् के स्थान पर विहित त को एश् तथा झ को इरेच् आदेश होता है। इरेच् के च् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होता है।

उदाहरण – एधाञ्चक्रे।

सूत्रार्थ समन्वय – एधाम्+कृ+त स्थिति में प्रकृत सूत्र से त को एश् आदेश तथा अनुबन्ध लोप होकर एधाम्+कृ+ए। लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व, अभ्यास कार्य में उरत् सूत्र से अ, रणरपरः से रपर, हलादिःशेषः से हलादि शेष, कुहोश्चुः से अभ्यास के ककार को चकार होकर एधाम् च कृ+ए तथा इकोयणचि से यण् होकर एधाम् चक्रे स्थिति बनती है तथा मोऽनुस्वारः से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर एधाञ्चक्रे रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में एधाञ्चक्रे रूप बनता है।

एधांचक्राते – एध् धातु को अनद्यतन परोक्षभूतार्थ क्रियावृत्ति का परोक्षे लिट् से लिट् लकार होकर एध्+लिट् स्थिति में इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः सूत्र से आम्, एध्+आम्+लिट्, आमः सूत्र से लिट् का लुक् होकर एधाम् इस आमन्तत्व से कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि सूत्र से लिट् परक को कृ धातु का प्रयोग एधाम् कृ+लिट् आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य सूत्र से आत्मनेपद एध् धातु प्रथमपुरूष

द्विवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+आताम् स्थिति में लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व, अभ्यास कार्य में एधाम् च कृ+आताम् तथा इकोयणचि से यण् होकर एधाम् चक्राताम् स्थिति में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि ताम् के आम् को ए होकर एधाम् चक्राते तथा मोऽनुस्वारः से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर एधाञ्चक्राते रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में एधांचक्राते रूप बनता है।

एधांचक्रिरे – एध् धातु को अनद्यतन परोक्षभूतार्थ क्रियावृत्ति का परोक्षे लिट् से लिट् लकार होकर एध्+लिट् स्थिति में इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः सूत्र से आम्, एध्+आम्+लिट्, आमः सूत्र से लिट् का लुक् होकर एधाम् इस आमन्तत्व से कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि सूत्र से लिट् परक को कृ धातु का प्रयोग एधाम् कृ+लिट् आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य सूत्र से आत्मनेपद एध् धातु प्रथमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+झ स्थिति में लिटस्तझयोरेशिरेच् से झ को इरेच्, अनुबन्ध लोप एधाम् कृ+इरे लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व, अभ्यास कार्य में एधाम् च कृ+इरे तथा इकोयणचि से यण् होकर एधाम् चक्रिरे् स्थिति में तथा मोऽनुस्वारः से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर एधाञ्चक्रिरे रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में एधांचक्रिरे रूप बनता है।

एधांचकृषे– एध् धातु लिट् में आम् कृ अनुप्रयोग से एधाम्+कृ+लिट् आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य सूत्र से आत्मनेपद एध् धातु मध्यमपुरूष एकवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+थास् स्थिति में थासःसे से थास् को से एधाम्+कृ+से इड्‌म प्राप्त किन्तु एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध, लिटस्तझयोरेशिरेच् से झ को इरेच्, अनुबन्ध लोप एधाम् कृ+इरे लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व, अभ्यास कार्य में एधाम् च कृ+से तथा आदेशप्रत्यययोः से सकार को षकार तथा मोऽनुस्वारः से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर एधाञ्चकृषे रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में एधांचकृषे रूप बनता है।

एधांचक्राथे – एध् धातु लिट् में आम् कृ अनुप्रयोग से एधाम्+कृ+लिट् आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य सूत्र से आत्मनेपद एध् धातु मध्यमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+आथाम् स्थिति में द्वित्व, अभ्यास कार्य में एधाम् च कृ+आथाम् तथा इकोयणचि से यण् होकर एधाम् चक्राथाम् स्थिति में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि थाम् के आम् को ए होकर एधाम् चक्राथे तथा मोऽनुस्वारः से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर एधाञ्चक्राथे रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में एधांचक्राथे रूप बनता है।

एधांचकृद्वे – एध् धातु से पूर्ववत् लिट् में आम् कृ अनुप्रयोग से एधाम्+कृ+लिट्, मध्यमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+ध्वम् स्थिति में

20.7 इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्॥ (8.3.78)

सूत्रार्थ – इणन्त अंग से परे षीध्वम् (आ. लिङ्) शब्द के तथा लुङ् और लिट् के धकार को ढकार (मूर्धन्य) आदेश हो।

सूत्र व्याख्या – यह विधि सूत्र है। इण्: (5/1) षीध्वम् लुङ् लिटाम् (6/3), ध: (6/1), अंगात् (5/1) ये चार पद है। अपदान्तस्य मूर्धनस्य सूत्र से मूर्धन्य: इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति है। षीध्वं लुङ् च लिट् च इति षीध्वंलुङ्लिट:, तेषां षीध्वंलुङ्लिटाम् इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमाहार:। पद योजना – इण: अंगात् षीध्वंलुङ्लिटां ध: मूर्धन्य:। यहां इण: यह विशेषण पद है। तदन्तविधि से इण्णन्तात् अंगात् यह अर्थ आता है। सूत्रार्थ होता है – इणन्त अंग से परे षीध्वम् (आ. लिङ्) शब्द के तथा लुङ् और लिट् के धकार को ढकार (मूर्धन्य) आदेश होता है।

उदाहरण – एधाञ्चकृढ्वे।

सूत्रार्थ समन्वय – पूर्व सूत्रों से एधाम्+च कृ+ध्वम् स्थिति में इणन्त अंग चकृ है उससे लिट् का धकार है प्रकृत सूत्र से धकार से मूर्धन्य ढकार होकर एधाम् च कृढ्वम् स्थिति में टित् आत्मनेपदानां टेरे सूत्र सेटि अम् को ए होकर एधाम् चकृढ्वे रूप सिद्ध होता है। अनुस्वार एवं परसवर्ण होकर एधांचकृढ्वे तथा एधाञ्चकृढ्वे रूप सिद्ध होता है।

एधांचक्रे – एध् धातु से पूर्ववत् लिट् में आम् कृ अनुप्रयोग से एधाम्+कृ+लिट् उत्तमपुरूष एकवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+इ स्थिति में द्वित्व, अभ्यास कार्य में एधाम् च कृ+इ तथा इकोयणचि से यण् होकर एधाम् चक्रि स्थिति में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि इ को ए होकर एधाम् चक्रे तथा मोऽनुस्वार: से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर एधाञ्चक्रे रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में एधांचक्रे रूप बनता है।

एधांचकृवहे, एधांचकृमहे, – एध् धातु से पूर्ववत् लिट् में आम् कृ अनुप्रयोग से एधाम्+कृ+लिट् उत्तमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में एधाम् कृ+वहि स्थिति में द्वित्व, अभ्यास कार्य में एधाम् च कृ+वहि स्थिति में टित आत्मनेपदानाम् टेरे सूत्र से टि इ को ए होकर एधाम् च कृ वहे तथा मोऽनुस्वार: से पदान्त मकार को अनुस्वार एवं वा पदान्तस्य सूत्र से अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण होकर एधाञ्चकृवहे रूप सिद्ध होता है। तथा परसवर्ण के अभाव में एधांचकृवहे रूप बनता है। इसी प्रकार उत्तमपुरूष बहुवचन में **एधाञ्चकृमहे, एधांचकृमहे** रूप सिद्ध होता है।

एध् धातु से आम् मे भू धातु के अनुप्रयोग में परस्मैपद होता है। भू धातु से लिट में रूप साधन प्रक्रिया पूर्ववत् होती है। इसी प्रकार अस् धातु के अनुप्रयोग में होता है।

कृ भू अस् धातुओं के अनुप्रयोग से रूप –

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	एधांचक्रे	एधांचक्राते	एधांचक्रिरे
मध्यमपुरुष:	एधांचकृषे	एधांचक्राथे	एधांचकृढ्वे
उत्तमपुरुष:	एधांचक्रे	एधांचकृवहे	एधांचकृमहे

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधाम्बभूव	एधाम्बभूतुः	एधाम्बभूवुः
मध्यमपुरुषः	एधाम्बभूविथ	एधाम्बभूवथुः	एधाम्बभूव
उत्तमपुरुषः	एधाम्बभूव	एधाम्बभूविव	एधाम्बभूविम

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधामास	एधामासतुः	एधामासुः
मध्यमपुरुषः	एधामासिथ	एधामासथुः	एधामास
उत्तमपुरुषः	एधामास	एधामासिव	एधामासिम

पाठगत प्रश्न 20.2

1. इजादेश्च गुरूमतोऽनृच्छ सूत्र की वृत्ति लिखिए।
2. इजादेश्च गुरूमतोऽनृच्छ सूत्र से क्या होता है?
3. आम्प्रत्यय किस प्रकार का बहुव्रीहि है?
4. एध् धातु से भू का प्रयोग होने पर परस्मैपद है या आत्मनेपद?
5. आमः सूत्र से किसका लुक् होता है?
6. लिटस्तझयोरेशिरेच् सूत्र से त को एश्, झ को इरेच् किस नियम से होता है?
7. एध् धातु लिट् प्रथम पुरूष एकवचन में रूप क्या होता है?
8. एध् धातु से लिट् में अस् का प्रयोग करके रूप लिखिए।
9. एधोञ्चकृढ्वे में ध्वम् के ध् को ढ् किस सूत्र से होता है?

एध् धातु - लुट् लकार

एध् धातु से लुट् में प्रथमपुरूष के रूप में कोई विशेष कार्य नहीं है। वे रूप पूर्व सूत्र से ही होते है। वहां स्यतासी लृलुटोः, लुटः प्रथमस्य डारौरसः, तासस्त्योर्लोपः रि च सूत्र प्रयुक्त होते हैं जैसे-

एधिता - एध् धातु से लुट् में प्रथम पुरूष एकवचन की विवक्षा में त प्रत्यय-एध्+त स्थिति में कर्तरिशप् से शप् प्राप्त किन्तु शप् के स्थान पर तास् होकर एध्+तास्+त् आर्धधातुक होने से वलादि को इट् का आगम, अनुबन्ध लोप एध्+इ+तास्+त। लुटः प्रथमस्य डारौरसः सूत्र से त प्रत्यय को

डा सर्वादेश एवं अनुबन्ध लोप होकर एध्+इतास्+आ, डित् होने से टि का लोप होकर एधिता रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार अन्य रूप समझने चाहिए। मध्यमपुरूषबहुवचन में ध्वम् प्रत्यय में एध् इतास् ध्वम् स्थिति में-

20.8 धि च॥ (8.2.25)

सूत्रार्थ - धकारादि प्रत्यय परे हो तो सकार का लोप हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में धि सप्तम्यन्त और च अव्ययपद ये दो पद है। रात्सस्य सूत्र से सस्य यह षष्ठ्यन्त पद आता है। संयोगान्तस्य लोपः से लोपः इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। यहां प्रत्यये का अध्याहार करना चाहिए। धि प्रत्यये इस तदादिविधि से धकारादि प्रत्यये यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है - धकारादि प्रत्यय परे हो तो सकार का लोप होता है।

उदाहरण - एधिताध्वे

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व सूत्रों से एधितास्+ध्वम् स्थिति में ध्वम् धकारादि प्रत्यय परे है। अतः धि च सूत्र से सकार का लोप होकर एधिताध्वम् स्थिति में टि को एकार होकर एधिताध्वे रूप सिद्ध होता है।

पूर्ववत् एध् धातु से उत्तमपुरूष एकवचन में एध्+इतास्+इ स्थिति में टित आत्मपेदानां टेरे सूत्र से टि इ को ए होकर एधितास्+ए।

20.9 ह एति॥ (7.2.52)

सूत्रार्थ - तास् और अस् के सकार को हकार हो जाता है, एकार परे हो तो।

सूत्रव्याख्या- इस विधि सूत्र में ह(1/1) और इति(7/1) दो पद है। तासस्त्योर्लोपः सूत्र से तासस्त्योः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। सः स्यार्धधातुके सूत्र से सः इस षठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। तासस्त्योः सः यह अवयव षष्ठी है। उससे तासस्त्योरवयवस्य यह अर्थ आता है। सूत्रार्थ होता है - तास् और अस् धातु के अवयव जो सकार है उसको हकार होता है। यदि एकार परे हो तो।

उदाहरण - एधिताहे

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व सूत्रों से एधितास्+ए स्थिति में सकार को ह इति सूत्र से हकार होकर **एधिताहे** रूप सिद्ध होता है।

अन्य रूपों में भी इसी प्रकार समझने चाहिए

एधितास्वहे, एधितास्महे- पूर्ववत् एध् धातु से उत्तमपुरूष द्विवचन में एध्+इतास्+वहि स्थिति में टित आत्मपेदानां टेरे सूत्र से टि इ को ए होकर एधितास्+वहे वर्ण मेल होकर **एधितास्वहे** रूप सिद्ध होता है। उत्तमपुरूष बहुवचन में **एधितास्महे** रूप सिद्ध होता है।

एध् धातु से लुट् में रूप-

लुट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधिता	एधितारौ	एधितारः
मध्यमपुरुषः	एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
उत्तमपुरुषः	एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

एध् धातु - लिट् लकार

एध् धातु से लिट् में के रूप में कोई विशेष कार्य नहीं है। वे रूप पूर्व सूत्र से ही होते है। इस लकार में स्यतासी लृलुटोः से स्य, आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इडागम, आदेशप्रत्यययोः से सकार को षकार, टित आत्मपेदानां टेरे सूत्र से टि को एकार होता है।

एधिष्यते- एध् धातु से भविष्यत्काल में लृट्, शप् को बाधकर स्य, इडागम,सकार का षकार होकर एधिष्यत तथा टित आत्मपेदानां टेरे सूत्र से टि अकार को एकार होकर एधिष्यते रूप सिद्ध होता है। अन्य रूप इसी प्रकार समझने चाहिए।

एध् धातु से लिट् में रूप-

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
मध्यमपुरुषः	एधिष्यसे	एधिष्यथे	एधिष्यध्वे
उत्तमपुरुषः	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

एध् धातु लोट् में रूप

एध् धातु से लोट् में प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में त प्रत्यय शप् का आगम, तथा टित आत्मपेदानां टेरे सूत्र से टि अकार को एकार होकर एध्+अ+ते।तब-

20.10 आमेतः (3.4.90)

सूत्रार्थ - लोट के एकार् को आम् हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में आम् (1/1) एतः (6/1) ये दो पद है। लोटो लङ्वत् सूत्र से लोटः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। लोट् एत् का अवयव षष्ठी है। सूत्रार्थ होता है - लोट् के अवयव एकार को आम् होता है।

उदाहरण - एधताम् एधेताम् एधन्ताम् एधेथाम्।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व सूत्रों से एधते स्थिति में आमेतः सूत्र से लोट् के अवयव एकार को आम् होकर एधताम् रूप सिद्ध होता है। प्रथमपुरूष द्विवचन में एधन्ते स्थिति में आम् होकर एधन्ताम् रूप सिद्ध होता है। उसी प्रकार मध्यम पुरूष द्विवचन में एधेथे स्थिति में आम् होकर एधेथाम् रूप सिद्ध होता है।

एधस्व-एध् धातु से लोट् में मध्यमपुरूष एकवचन की विवक्षा में थास् प्रत्यय शप् का आगम, तथा थासः से सूत्र से थास् को से होकर एधसे। तब-

20.11 सवाभ्याम् वामौ।। (3.4.91)

सूत्रार्थ - स् और व् से परे लोट् के एकार को क्रमशः व और अम् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में सवाभ्याम् (5/2), वामौ (1/2) ये दो पद है। लोटो लङ्वत् सूत्र से लोटः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। आमेतः सूत्र से षष्ठ्यन्त एतः पद की अनुवृत्ति है। वश्च् अम् च वामौ इति इतरेतरयोगद्वन्द्वः। ताभ्याम् सवाभ्याम्। सूत्रार्थ होता है - सकार से और वकार से परे लोट् के एकार के स्थान पर क्रमशः व एव अम् आदेश होता है।

उदाहरण - एधस्व, एधध्वम्।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व सूत्र से एधसे स्थिति में से के एकार को प्रकृत सूत्र वकार होकर एधस्व रूप सिद्ध होता है।

एधध्वम्- -एध् धातु से लोट् में मध्यमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय शप् का आगम, तथा टि को ए होकर एधध्वे। सवाभ्याम् वामौ से ए को अम् होकर एधध्वम् रूप सिद्ध होता है।

एधै- -एध् धातु से लोट् में उत्तम पुरूष एकवचन की विवक्षा में इट् प्रत्यय शप् का आगम, तथा टि को ए होकर एध+ए। तब-

20.12 एत ऐ।। (3.4.93)

सूत्रार्थ - लोट् के उत्तमपुरूष के एकार को ऐकार हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में एतः (6/1) ऐ (1/1) ये दो पद है। लोटो लङ्वत् सूत्र से लोटः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। आङुत्तमस्य पिच्च सूत्र से उत्तमस्य इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। सूत्रार्थ होता है - लोट् के अवयव एकार को ऐकार होता है।

उदाहरण - एधै, एधावहै, एधामहै।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व सूत्र से एध ए स्थिति में एत ऐ सूत्र से एकार को ऐकार होकर एध ऐ, आङुत्तमस्य पिच्च सूत्र से आट् का आगम, एध आ ए तथा आटश्च से वृद्धि होकर एधै रूप

सिद्ध होता है। उत्तम पुरूष द्विवचन एध् अ वहि में एकार को ऐकार, आट् का आगम, आटश्च से वृद्धि, अकः सवर्णे दीर्घः होकर एधावहै रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार एधामहै रूप सिद्ध होता है।

एध् धातु से लोट् में रूप–

लोट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
मध्यमपुरुषः	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
उत्तमपुरुषः	एधै	एधावहै	एधामहै

एध् धातु लङ् में रूप

एध् धातु लङ् रूपों को सिद्ध करने के लिए नवीन सूत्रों की आवश्यकता नहीं है। यहां प्रमुखरूप से एक रूप नीचे प्रदर्शित है। अन्यरूप स्वयं सिद्ध कर सकते हैं। लङ् के कार्य में डित् होने से टित्त्व का अभाव होने से टित् आत्मनेपदानां टेरे आदि कार्य नहीं होते हैं। आत्मनेपद विधान के शप् आदि कार्य होंगे। एध् धातु अजादि होने से लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अट् आगम का बोध होकर आडजादीनाम् सूत्र प्रवृत होता है।

ऐधत – एध् धातु से अनद्यतन भूतार्थ में लङ् में एध्+ल् स्थिति में प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में त प्रत्यय, कर्त्तरिशप् से शपागम्, आडजादीनाम् सूत्र से अट् का बाध करके आट् आदि अवयव होकर आ+एध्+अ+त स्थिति में आटश्च से आकार एवं एकार का वृद्धि होकर ऐधत रूप सिद्ध होता है। अन्य रूपों में विशेकर उत्तमपुरूष एकवचन में इट्, शप् , आट होकर आ+एध्+अ+इ स्थिति में अकार एवं इकार को गुण तथा आटश्च से वृद्धि होकर ऐधे रूप बनता है। द्विवचन में आ+एध्+अ+वहि स्थिति में अतोदीर्घो यञि से अदन्त को दीर्घ होकर ऐधावहि रूप बनता है। इसी प्रकार ऐधामहि रूप सिद्ध होता है।

एध् धातु से लोट् में रूप–

लोट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
मध्यमपुरुषः	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
उत्तमपुरुषः	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

एध् धातु विधिलिङ् में रूप

अब इस धातु के लिङ् में रूप प्रस्तुत किये जा रहे है। लिङ् विधिलिङ् और आशीर्लिङ् भेद से दो प्रकार का है। यहां आदि में विधिलिङ् रूप प्रदर्शित है।

20.13 लिङः सीयुट्॥ (3.4.102)

सूत्रार्थ – लिङ् को सीयुट् का आगम हो।

सूत्र व्याख्या – इस विधि सूत्र में लिङः (6/1), सीयुट् (1/1) दो पद है। सीयुट् में उकार उच्चारणार्थक तथा ट् इत्संज्ञक है। आद्यन्तौ टकितौ के नियम से सीयुट् लिङ् का आदि अवयव होता है। परस्मैपदों में इस के अपवाद यासुट् का विधान कर चुके है अतः परिशेष्यात् ये आत्मनेपदों में ही प्रवृत्त होता है।

उदाहरण – एधेत। एधेयाताम्।

सूत्रार्थ समन्वय – एध् धातु से विधिलिङ् में प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में त प्रत्यय, लिङः सीयुट् सूत्र से त प्रत्यय को सीयुट् टित् होने से आदि अवयव होकर एध्+सीय्+त स्थिति बनती है। कर्तरिशप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर एध्+अ+सीय्+त। लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य सूत्र से अनन्त्य सीयुट् के अवयव सकार का लोप तथा लोपो व्योर्वलि से यकार का लोप होकर एध्+अ+ई+त रूप बना। अकार एवं ईकार को गुण एकार होकर **एधेत** रूप सिद्ध होता है।

एधेयाताम्–एध् धातु से विधिलिङ् में प्रथमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में आताम् प्रत्यय, लिङः सीयुट् सूत्र से सीयुट् होकर एध्+सीय्+आताम् स्थिति बनती है। कर्तरिशप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर एध्+अ+सीय्+आताम्। लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य सूत्र से अनन्त्य सीयुट् के अवयव सकार का लोप होकर एध्+अ+ईय+आताम् रूप बना। अकार एवं ईकार को गुण एकार होकर **एधेयाताम्** रूप सिद्ध होता है।

एध्–धातु से विधिलिङ् में प्रथमपुरूष बहुवचन में झ प्रत्यय होकर एध्+झ स्थिति में –

20.14 झस्य रन्॥ (3.4.105)

सूत्रार्थ – लिङ् के झ को रन् आदेश हो।

सूत्र व्याख्या – इस विधि सूत्र में झस्य (6/1) रन् (1/1) ये दो पद है। लिङः सीयुट् से लिङः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। झस्य यह स्थान षष्ठी है। रन् अनेकाल् है। अतः अनेकाल्शित् सर्वस्य परिभाषा से सम्पूर्ण झ को रन् होता है। सूत्रार्थ होता है – लिङ् के स्थान पर विहित झ के स्थान पर रन् आदेश होता है।

उदाहरण – एधेरन्

सूत्रार्थ समन्वय – पूर्व सूत्र से एध्+झ स्थिति में प्रकृतसूत्र झस्य रन् से झ को रन् होकर एध्+रन् बना, लिङः सीयुट् से रन् को सीयुट्, कर्त्तरिशप् से शप् आगम्, अनुबन्ध लोप होकर एध्+अ+सीय्+रन् बना। यहां लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य से अनन्त्य सीयुट् के सकार का लोप, लोपो व्योर्वलि से यकार लोप, और अकार ईकार को गुणैकादेश होकर **एधरेन्** रूप सिद्ध होता है।

एधेथाः – एध् धातु से विधिलिङ् में मध्यमपुरूष एकवचन की विवक्षा में थास् प्रत्यय, सीयुट्, शप्, सीयुट् के अवयव सकार का लोप होकर अकार एवं ईकार को गुण एकार तथा सकार को विसर्ग होकर **एधेथाः** रूप सिद्ध होता है।

एधेयाथाम् – एध् धातु से मध्यमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में आथाम् प्रत्यय, सीयुट्, शप् , सीयुट् के अवयव सकार का लोप होकर अकार एवं ईकार को गुण एकार होकर **एधेथाताम्** रूप सिद्ध होता है।

एधेध्वम् – एध् धातु से मध्यमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय, सीयुट्, शप् , सीयुट् के अवयव सकार का लोप होकर अकार एवं ईकार को गुण एकार होकर **एधेध्वम्** रूप सिद्ध होता है।

एधेय – एध् धातु से उत्तम पुरूष एकवचन में इट् होकर एध्+इ स्थिति में –

20.15 इटोऽत्॥ (3.4.106)

सूत्रार्थ – लिङ् में इट् को अत् हो।

सूत्र व्याख्या – इस विधि सूत्र में इटः (6/1), अत् (1/1) दो पद है। लिङः सीयुट् से लिङः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। तकार उच्चारणार्थ है। इटः स्थानषष्ठी है सूत्रार्थ होता है – लिङ् के स्थान पर विहित इट् के स्थान पर अत् आदेश होता है।

उदाहरण – एधेय

सूत्रार्थसमन्वय – एध्+इ स्थिति में लिङ् के स्थान पर विहित इट् को अ होकर एध्+अ उसके बाद पूर्ववत् अ प्रत्यय को सीयुट्, शप् , सीयुट्, के स् का लोप, अ+ई को गुण कार्य होकर एधेय रूप बनता है।

एधेवहि–एध् धातु से उत्तमपुरूष द्विवचन में वहि प्रत्यय, पूर्ववत् सीयुट्, शप् , सीयुट् के अवयव सकार का लोप होकर अकार एवं ईकार को गुण एकार होकर **एधेवहि** रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार उत्तमपुरूष बहुवचन में **एधेमहि** रूप सिद्ध होता है। एध् धातु से विधिलिङ् में रूप–

विधिलिङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
मध्यमपुरुषः	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
उत्तमपुरुषः	एधेय	एधेवहि	एधेमहि

एध् धातु – आशीर्लिङ् रूप

अब आशीर्लिङ् के रूप सिद्ध करते हैं। यहाँ बहुत सा कार्य विधिलिङ् के समान होता है। फिर भी लिङाशिषि सूत्र से लकार की आर्धधातुक संज्ञा होने से कुछ विशेष कार्य होते है।

एध् धातु से आशिषि लिङ्लोटौ सूत्र से आशीर्लिङ् के प्रथम पुरूष एकवचन में त प्रत्यय एध्+त, इस स्थिति में लिङ सीयुट् सूत्र से त प्रत्यय को सीयुट् आगम जो आदि अवयव होकर एध्+सीय्+त। तब-

20.16 सुट् तिथोः॥ (3.4.107)

सूत्रार्थ - लिङ् के अवयव तकार एवं धकार का सुट् हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में दो पद है। यहाँ सुट् विधेयबोधक प्रथमान्त पद है। तिथोः यह षष्ठीद्विवचनान्त पद है। तिश्च थ् च इति तिथौ तयोः तिथोः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। यहां अवयव षष्ठी है। अतः लिङ् के अवयव तकार एवं थकार यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है - लिङ् के अवयव तकार एव थकार को सुट् का आगम होता है। सुट् टित्कारण से लिङ् से त एवं थ के आदि अवयव हो।

उदाहरण - एधिषीष्ट।

सूत्रार्थसमन्वय- एध् धातु से आशीर्लिङ् में त प्रत्यय होकर, एध्+सीय्+त। स्थिति में लिङ् के अवयव तकार को इस सूत्र से सुट् का आगम व अनुबन्ध लोप होकर एध्+सीय्+स्+त स्थिति होता है। यदागम परिभाषा से यहाँ सीय्+स्+त यह समुदाय तिङ् है। लिङाशिषि सूत्र से लिङ आदेश तिङ् की आर्धधातुक संज्ञा होती है। अतः आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् का आगम एवं अनुबन्ध लोप, एध्+इ+सीय्+स्+त स्थिति बनती है। लोपो व्यांवलि से सीयुट् के यकार का लोप एध्+इ+सी+स्+त सीयुट् का एवं सुट् का स् एव ईकार से परे होने के कारण आदेश प्रत्यययोः से मूर्धन्य होकर एधिषीष्त तथा ष्टुना ष्टुः सूत्र से तकार का टकार होकर एधिषीष्ट रूप सिद्ध होता है। इस लकार लिङादेश के आर्धधातुक होने से कर्तरिशप् से शप् नहीं होता। सकार आर्धधातुक अवयव नहीं है अतः लिङ:सलोपोऽनन्त्यस्य से स् लोप नहीं होता।

एधिषीयास्ताम्- एध् धातु से आशीर्लिङ् में प्रथमपुरूष द्विवचन में आताम् प्रत्यय होकर, सीयुट् एवं सुट् आगम एध्+सीय्+आस्ताम्। आर्धधातुक संज्ञक होने से आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् का आगम एवं सीयुट् के सकार को षकार होकर एधिषीयास्ताम् रूप सिद्ध होता है।

एधिषीरन्- एध् धातु से आशीर्लिङ् में प्रथमपुरूष बहुवचन में झ प्रत्यय झस्य रन् झ को रन् होकर, सीयुट् इट् आगम एध्+इ+सीय्+रन्। लोपो व्यांवलि से सीयुट् के यकार का लोप एवं सीयुट् के सकार को षकार होकर एधिषीरन् रूप सिद्ध होता है।

एधिषीष्ठाः- एध् धातु से आशीर्लिङ् में मध्यमपुरूष एकवचन में थास् प्रत्यय होकर, सीयुट्, इट्, सुट् आगम एध्+इ+सीय्+स्थास् एवं सीयुट् के सकार को षकार, थकार को ष्टुत्व तथा सकार को विसर्ग होकर एधिषीष्ठाः रूप सिद्ध होता है।

एधिषीयास्थाम्- एध् धातु से आशीर्लिङ् में मध्यमपुरूष द्विवचन में आथाम् प्रत्यय होकर, सीयुट् एवं सुट् आगम एध्+सीय्+आस्थाम्। आर्धधातुक संज्ञक होने से आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् का आगम एवं सीयुट् के सकार को षकार होकर एधिषीयास्थाम् रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणियाँ

एधिषीध्वम्- एध् धातु से आशीर्लिङ् में मध्यमपुरूष बहुवचन में ध्वम् प्रत्यय होकर, सीयुट्, इट् आगम एध्+इ+सीय्+ध्वम्। सीयुट् के सकार को षकार होकर, यकार लोप एवं इण:षीध्वंलुङिलटां धोऽङात् से धकार को ढकार होकर एधिषीध्वम् रूप सिद्ध होता है।

एधिषीय- एध् धातु से आशीर्लिङ् में उत्तमपुरूष एकवचन में इट् प्रत्यय, इटोऽत् से अत्, सीयुट्, इट् का आगम, सीयुट् के सकार को षकार एधी+षीय् + अ एधिषीय रूप सिद्ध होता है।

एधिषीवहि, एधिषीमहि - एध् धातु से आशीर्लिङ् में उत्तमपुरूष द्विवचन में वहि प्रत्यय, सीयुट्, इट् का आगम, सीयुट् के सकार को षकार एधी+षीय्+वहि, यकार लोप होकर एधिषीवहि रूप सिद्ध होता है। उत्तमपुरूष बहुवचन में एधिषीमहि रूप सिद्ध होता है।

एध् धातु से आशीर्लिङ् में रूप-

आशीर्लिङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
मध्यमपुरुषः	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
उत्तमपुरुषः	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

एध् धातु - लुङ् रूप

ऐधिष्ट - भूतकाल में एध् धात्वर्थ व्यापार की विवक्षा में लुङ् सूत्र से लुङ् प्रत्यय, प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में त प्रत्यय होकर एध्+त। इस स्थिति में च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, च्लि को च्लेः सिच् सूत्र से सिच् प्रत्यय, तथा अनुबन्ध लोप होकर एध्+स+त। सिच् आर्धधातुक एवं वलादि होने से आर्धधातुकस्येड् वलादेः सूत्र से इट् का आगम एवं अनुबन्ध लोप होकर एध्+इ+स्+त। आडजादीनाम् सूत्र से आट् का आगम तथा अनुबन्ध लोप, आ+एध्+इ+स्+त। आकार एव एकार को आटश्च से वृद्धि ऐकार, आदेश प्रत्यययोः से सकार को मूर्धन्य होकर ऐधिष्+त तथा ष्टुना ष्टुः से तकार को टकार होकर ऐधिष्ट रूप सिद्ध होता है। प्रथमपुरूष द्विवचन में आताम् में ऐधिषाताम् रूप सिद्ध होता है।

20.17 आत्मनेपदेष्वनतः॥ (7.1.5)

सूत्रार्थ - अत् (ह्रस्व अकार) से भिन्न वर्ण परे हो तो आत्मनेपद प्रत्यय के अवयव झ को अत् (अ) आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र में आत्मनेपदेषु (7/3), अनतः (5/1) ये दो पद है। झः यह षष्ठ्यन्त पद झोऽन्तः सूत्र से आता है। अतः यह प्रथमान्त पद अदभ्यस्तात् सूत्र से अनुवृत्त है। न अत् इति

अनत्, तस्मात् अनतः इति न् तत्पुरूष समासः। सूत्रार्थ होता है – अत् (ह्रस्व अकार) से भिन्न वर्ण परे हो तो आत्मनेपद प्रत्यय के अवयव झ को अत् (अ) आदेश होता है। यह झोऽन्तः का अपवाद है। उससे केवल झकार के स्थान पर अकार होता है झकारोत्तर अकार यथावत् है।

उदाहरण – ऐधिषत।

सूत्रार्थ समन्वय – पूर्व सूत्रों से एध्+इस्+झ स्थिति में झोऽन्तः से झ को अन्त प्राप्त किन्तु यहाँ झकार का अनकार सकार से परे है। अतः प्रकृत सूत्र से झ को अकार होकर एध् इस् अत्+अ। उसके बाद सकार को आदेश प्रत्यययोः सूत्र से मूर्धन्य आदेश होकर एधिष्+अत्+अ। आडजीदीनाम् से आट् एवं आटश्च से वृद्धि होकर ऐधिषत रूप सिद्ध होता है।

ऐधिष्ठाः – एध् धातु से लुङ् में मध्यमपुरूष एकवचन में थास् प्रत्यय ,च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, च्लि को सिच्, इट् का आगम एवं आडजादीनाम् सूत्र से आट् का आगम होकर आ+एध्+इ+स्+थास् आकार एव एकार को आटश्च से वृद्धि ऐकार, आदेश प्रत्यययोः से सकार को मूर्धन्य होकर ऐधिष्+थास् तथा ष्टुना ष्टुः से थकार को ठकार तथा सकार को विसर्ग होकर ऐधिष्ठाः रूप सिद्ध होता है।

एध् धातु से लुङ् में रूप–

लृङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
मध्यमपुरुषः	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
उत्तमपुरुषः	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

पाठगत प्रश्न 20.3

1. एधिता में इट् विधायक सूत्र कौन है?
2. धि च सूत्र में धादि प्रत्यय में अर्थ कैसे आता है?
3. धि च सूत्र प्रत्यय में किस सूत्र से आता है?
4. एधिताहे में तास् के स् को ह् किस से होता है?
5. लोट के एकार को आम् किस सूत्र से होता है?
6. एधताम् में आम् किस सूत्र से होता है?
7. एधस्व में एकार को व किस से होता है?

8. एध् धातु लोट् में उत्तम पुरूष एकवचन में एधे में कौन सा सूत्र प्रवृत्त होता है।
9. एध् धातु को आट् का आगम किस से होता है?
10. आ+एध्+ल् में वृद्धि किस सूत्र से होती है?
11. लिङ में झ को रन् किस सूत्र से होता है?
12. एधेरन् में झेर्जुस् क्यों नहीं होता?
13. एधिषीष्ट में सकार को षकार किस से होता है?
14. एध् धातु लुङ् में ध्वम् में क्या बनता है?
15. आत्मनेपदेष्वनत: सूत्र से क्या होता है?

पाठ का सार

इस पाठ में मुख्य विषय आत्मनेपदी धातुओं के रूपों तथा आत्मनेपदी धातुओं को सिद्ध करने वाले सूत्र की व्याख्या अपेक्षित है। यहाँ एध् धातु प्रतीक रूप में उपस्थित है। इसके ज्ञान से इनके समान अन्य आत्मनेपदी धातुओं के रूप सिद्ध कर सकते हैं।

एध् धातु एधँ वृद्धौ यह धातु धातुपाठ में अकारादिक्रम से पठित है। वृद्धि अर्थक यह धातु अनुदात्तेत है उससे अनुदात्तङिन्त आत्मनेपदम् सूत्र से धातु से परे आत्मनेपद संज्ञक प्रत्यय होते हैं। यह अकर्मक धातु है। अत: कर्ता एवं भाव में प्रत्यय होते हैं कर्म में नहीं। यह धातु सेट है। यहाँ प्रारम्भ से लट् आदि दशलकारों के रूप सिद्ध किये हैं। लट् में तीन नवीन सूत्र है। टित आत्मनेपदानां टेरे सूत्र से टित् लकार में प्रवृत्त होता है। आतोङित: सूत्र से ङितो के आकार को इय् आदेश होता है। तृतीय सूत्र थास: से से टित् लकारों में विद्यमान थास् को से होता है। अनेकाल्शित् सर्वस्य की सहायता से सम्पूर्ण के स्थान पर होता है। एध् धातु गुरूमान और इजादि है। इस विशेषता से लिट् में एध् धातु को आम् प्रत्यय होता है। उससे कृभ्वस्धातूनाम् अनुप्रयोग होता है। आम् प्रकृतिभूत धातु से यदि आत्मनेपद का विधान होता है तो अनुप्रयुज्यमान कृ आदि धातुओं से परे भी आत्मनेपद प्रत्यय होता है। यहाँ आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य सूत्र विधायक है। आदेशौ लिटस्तझयोरेशिरेच् सूत्र से लिट् के स्थान विहित त प्रत्यय को एश् तथा झ प्रत्यय को इरेच् होता है। लिट् के मध्यम पुरूष बहुवचन में इण: षीध्वलुङ्लिटां धोऽगात् सूत्र से धकार को मूर्धन्य आदेश (ढकार) होता है।

लृट् में स्यतासीलृलुटो: सूत्र से स्य प्रत्यय होता है। आर्धधातुकस्येड् वलादे: सूत्र से इडागम होता है। अन्य कोई विशेष कार्य नहीं होता सभी साधारण है। लोट् में रूप सिद्ध करने के लिए तीन सूत्र आते हैं। आमेत: से एकार को आम् का विधान होता है। सवाभ्यां वामौ सूत्र से लोट् के स्थान पर विहित सकार से परे एकार के स्थान पर व एवं वकार से परे एकार के स्थाने अम् का विधान है। एत ऐ सूत्र से उत्तमपुरूष में एकार के ऐकार का विधान होता है। लुङ् में लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्त: सूत्र का बाध होकर एध् धातु से आडजादीनाम् सूत्र प्रवृत्त होता है आटश्च को वृद्धि होती है।

विधिलिङ् में सीयुट् का आगम विशेष कार्य है। तथा अनन्त्य सकार का लिङ् सलोपोऽनन्त्यस्य से लोप होता है। झेर्जुस् सूत्र से झ प्रत्यय को जुस् का अपवाद होकर झस्य रन् सूत्र से रन् होता है। इटोऽत् सूत्र से लिङादेश के इट् को अ होता है।

आशीर्लिङ् में सुट तिथोः सूत्र से तकार व थकार को सुट् का आगम होता है। लुङ् लकार के झ को अत् का विधान होता है। सर्वत्र आट् आगम, च्लि प्रत्यय, च्लि का सिच्, सिच् को इट् का आगम सकार को मूर्धन्य आदि कार्य होते है। लृङ् में स्यतासीलृलुटोः सूत्र से स्य प्रत्यय अंग को अट् का आट् का विधान रूप को इट् का आगम तथा सकार को मूर्धन्य आदि कार्य होते हैं।

योग्यतावर्धन

इस पाठ में कुछ विशेष विषय सूत्रगत या प्रक्रियागत है वे यहाँ आलोच्य है। अचोऽन्त्यादि टि सूत्र से टि संज्ञा की जाती है। एक पद में बहुत से पद होते है। उन अचों में जो अन्तिम अच् जिसके आदि में हा, उसकी टि संज्ञा होती है। उससे परे कोई हल् वर्ण हो तो उन सभी की टि संज्ञा होती है। सार्वधातुकम् अपित् यह अतिदेशसूत्र है अपित अर्थात् पित् भिन्न जो सार्वधातुक है वह ङित् वत् होता है। अर्थात् अपित् सार्वधातुक ङित् नहीं होता है। फिर भी इस सूत्र से विशेष आदेश से वह डिन्त होता है। तद्गुण सविज्ञान बहुव्रीहि अतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि ये बहुव्रीहि समास के दो भाग अवश्य जानने चाहिए। उसे हमारे द्वारा आवश्यक रूप से समास प्रकरण में देख सकते हैं। बहुव्रीहि अन्य पदार्थ प्रधान होता है। फिर भी यहाँ समस्यमान पदों का अन्वय या सम्बन्ध अर्थों को प्राप्त किया जाता है वहाँ तद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि होता है। जहाँ वह सम्बन्ध नहीं प्राप्त होता वहाँ अतद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि होता है। अनेकाल्शित् सर्वस्य यह परिभाषा सूत्र है। इस सूत्र से जो अनेकाल् और शित् आदेश है वह सम्पूर्ण के स्थान पर होता है। यहाँ लिटस्तझयोरशिरेच् सूत्र से सम्पूर्ण तकार के स्थान पर एश् आदेश होता है क्योंकि एश् पद अनेकाल् है।

पाठांत प्रश्न

1. टित आत्मनेपदानां टेरे सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. टेरे ङितः सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. आमेतः सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. इटोऽत् सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. सुट् तिथोः सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. आत्मनेपदेष्वनतः सूत्र की व्याख्या कीजिए।

8. आत्मनेपद प्रकरण का सार लिखिए।

9. एधते एधाते एधन्ते एधे एधसे एधामहे। एधांचक्रे एधांचक्रषे एधांचक्रद्वे एधांचक्रमहे एधाम्बभूव एधामास एधिता एधिताध्वे एधिताहे एधिष्यते एधताम् एधस्व एधध्वम् एधै। ऐधत ऐधे ऐधामहि। एधेत एधेरन्एधेय एधिषीष्ट एधिषीष्ठाः एधिषीय। ऐधिष्ट ऐधिषत ऐधिषि। की ससूत्र सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1

1. एध् धातु का अर्थ वृद्धि है।
2. धातु प्रकरण में मूलरूप एधँ् वृद्धौ धातु पठित है।
3. एध् धातु अनुदात्तेत् (अनुदात्त इत्) है।
4. अनुदात्तेत होने से आत्मनेदपदी है।
5. अनुदात्तङित आत्मनेपदम् सूत्र से आत्मनेदपदी है।
6. एध् धातु आत्मनेपदी है इसलिए तिपादि नौ प्रत्यय नहीं होते।
7. एध् धातु सेट् है।
8. एध् धातु अकर्मक है।
9. एधते में टित आत्मनेपदानां टेरे से एकार होता है।
10. अचों में जो अन्तिम अच्, जिसके आदि में हो, उसकी टि संज्ञा होती है।
11. एधते एधेते एधन्ते। एधसे एधेथे एधध्वे।एधे एधावहे एधामहे।
12. आताम् सार्वधातुकमपित् से ङित् है।
13. आताम् का आ आतो ङितः से इय् होता है।
14. आतो ङितः से अत् परे ङित् के आ को इय् होता है।

20.2

1. ऋच्छ् से भिन्न ऐसी इजादि धातु जो गुरूवर्ण से युक्त हो, उस से परे आम् प्रत्यय हो जाता है लिट् परे हो तो।
2. इजादि और गुरूमान धातु को आम् प्रत्यय होता है।
3. आम्प्रत्यय में आम् विधान अतद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि से होता है।

4. परस्मैपद।
5. आम: सेआम् से परे का लुक् होता है।
6. यथा संख्यमनुदेश: समानाम् की परिभाषा से।
7. पुस्तक में देखे।
8. पुस्तक में देखे।
9. इण: षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात् से ध्वम् केधकार से मूर्धन्य ढकार होकर होता है।

20.3

1. एधिता में आर्धधातुके वलादे: से इट् का आगम होता है।
2. धि प्रत्यये में यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे परिभाषा से तदादिविधि से धकारादि प्रत्यये यह अर्थ प्राप्त होता है।
3. धि च से प्रत्यय: के अधिकार प्रत्यये यह अर्थ प्राप्त होता है।
4. एधिताहे में तास् के स को हकार ह एति सूत्र से होता है।
5. लोट् के एकार को आम् आमेत सूत्र से होता है।
6. एधिताम् में आमेत सूत्र से आम् होता है।
7. एधस्व में एकार को सवाभ्यांवामौ से व होता है।
8. एधे में एत ऐ सूत्र होता है।
9. एध् धातु में आडजादीनाम् से आट् होता है।
10. आ+एध्+ल् में आटश्च से वृद्धि होती है।
11. लिङ् में झ को रन् झस्यरन् से होता है।
12. एधेरन् में झस्यरन् का अपवाद झेर्जुस् नहीं होता।
13. एधिषीष्ट में आदेश प्रत्यययो: से षकार होता है।
14. एध् धातु से ध्वम् में ऐधिढ्वम् होता है।
15. आत्मनेपदेष्वनत: से झ को अत् होता है।